भावनात्मक एकता के विकास में शिक्षा किस प्रकार सहायक हो सकती है?

बच्चों को भावनात्मक एकता के लिए शिक्षा देना क्यों आवश्यक है?

भावनात्मक एकता का अर्थ

भावात्मक एकता द्वारा राष्ट्र व्यक्ति वे आधार में हम कुछ निश्चित परिवर्तन लाना चाहते हैं। भारत एक राष्ट्र है, इसमें कोई सन्देह नहीं। समूचे राष्ट्र को एक मानना भी आवश्यक है। हममें संवेगात्मक अनुभूति भी तदनुरूप ही होनी चाहिए, भावात्मक एकता का लक्ष्य राष्ट्रीय एकता है। इसलिए राष्ट्रीय एकता और भावात्मक को लगभग एक ही अर्थ में प्रस्तुत कर दिया जाता है। राष्ट्रीय एकता बहुत कुछ राट्रीयता के विकास से संबंधित है।

व्यक्तियों के भावात्मक संसार के आधार पर ही राष्ट्र का निर्माण होता है। यदि हम भाषा, जाति, सम्प्रदाय के आधार पर ही प्रेम, सहानुभूति, क्रोध, संवेगों का विकास करेंगे ते हमारा राष्ट्र भी उसी जाति, भाषा आदि के आधार पर छिन्न-भिन्न होगा। व्यक्ति और समाज में पास्परिक विरोध नहीं है। यदि व्यक्ति के संवेगों का उचित 'मागन्तीकरण और शोध' होगा तो निस्सन्देह वह राष्ट्र से प्रेम करेगा और राष्ट्र तथा समाज का विकास होगा भावात्मक एकता का नकारात्मक अर्थ विघटनकारी तत्वों से घृण करना और राष्ट्र को फूट से बचाना।

इसका सकारात्मक अर्थ राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयत्न करना है संपूर्ण राष्ट्र को अपना समझकर उससे प्रेम करना है।

अन्तर संस्कृति भावना-

भारत के वर्तमान समाज की जड़े बहुत गहरी हैं। इसका अतीत बड़ा ही गौरवमय रहा है। यह देश बहुत बड़ा है उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में हिन्दमहासागर पर्यन्त तथा पूर्व में नागालेण्ड और असम से लेकर पश्चिम में पंजाब तक यह फैला हुआ है। इतने बड़े देश में अनेक प्रकार की प्रथाएँ, परम्पराएँ एवं रीतियाँ प्रचलित हैं। लोगों के खान-पान भिन्न हैं। मद्रास में चावल अधिक खाया जाता है तो किरल की सामान्य जनता 'टपियोका' पर निर्भर है। पंजाब में गेहूँ अधिक खाया जाता है तो बंगाल में मछली और चावल मुख्य भोजन है। दक्षिण की 'इडली', 'डोसा' उत्तर भारत का निवासी नहीं जानता। खान-पान ही नहीं खाने का ढंग भी अलग है।

भाषा की दृष्टि से भिन्नता है। भारतीय संविधान में 22 मुख्य भाषाओं की गणना की जाती है। इनके अतिरिक्त अंग्रेज़ी का भी चलन है। धर्म और सम्प्रदाय की दृष्टि से भी भिन्नता है। आदर्शों, मूल्यों एवं. मान्यताओं में भी अन्तर है। इस दृष्टि से भारत में अनेक उपसंस्कृतियाँ हैं। किसी वेश-भूषा, रहन-सहन, खान-पान, भाषा आदि से घृण करना ठीक नहीं है। सभी को अपनी वेश-भूषा, रहन-सहन प्रिय है। अतः बालक में सभी प्रकार की उपसंस्कृतियों की समझ उत्पन्न की जाये जिससे यह भिन्न मान्यताओं को समझकर उनकी सराहना कर सके। इसमें अन्तर सांस्कृतिक भावना का विकास होना भावात्मक एकता के लिए अन्तर सांस्कृतिक भावना का विकास आवश्यक है। अन्तर सांस्कृतिक भावना से राष्ट्र सुदृढ़ होगा। इससे अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण के विकास में भी सहायता मिलती है।

भावनात्मक एकता के स्तर-

एकता के चार स्तर होते हैं। पहले स्तर पर लोग एक-दसरे के साथ रहना प्रारम्भ करते हैं। इस स्तर पर लागो में अकेले की अपेक्षा समूह, समुदाय या राष्ट्र में रहने की आदत पड़ती है।

दसरे स्तर पर लोग जो एक-दूसरे क पास रहते हैं। एक-दूसरे को समझना प्रारम्भ करते हैं। पहले स्तर पर समझने की उत्सुकता नहीं होती है। उस स्तर पर केवल सामूहिक जीवन की आदत पड़ती है। दूसरे स्तर पर दूसर का समझने की कोशिश की जाती है। तीसरे स्तर पर एक-दूसरे को समझना ही पर्याप्त नहीं है। सामन का सम्बन्ध केवल बुद्धि से होता है। इसमें रोगात्मक सम्बन्ध का अभाव रहता है। तासरा स्तर रोगात्मक सम्बन्ध का है।

हम इस स्तर पर दूसरे की प्रथाओं में रुचि लेने लगते हैं। इस स्तर पर दूसरे की परम्पराओं से घृणा समाप्त हो जाती है लोग शान्तिपूर्वक रहते हैं।

चौथे स्तर पर सभी लोग जो एक-दूसरे के पास रहते हैं, एक-दूसरे की परम्पराओं, रीतियों एवं मान्यताओं को अपना समझने लगते हैं और उन सभी से प्रभावित होते हैं। यह चौथा स्तर भावात्मक उससे प्रेम करने लगता है।

sarkariguider.com

शिक्षाशास्त्र

महत्वपूर्ण लिंक

- ई-लर्निंग का अर्थ | ई-लर्निंग की प्रकृति एवं विशेषतायें | ई-लर्निंग के विविध रूपों एवं शैलियों का उल्लेख
- ओवरहेड प्रोजेक्टर पर संक्षिप्त लेख | ओवरहेड प्रोजेक्टर का उपयोग | ओवरहेड प्रोजेक्टर की सीमायें
- आगमन विधि का अर्थ | निगमन पद्धति का अर्थ | आगमन विधि तथा निगमन पद्धति के गुण एवं दोष
- शिक्षा का अर्थ | शिक्षा की प्रमुख परिभाषाएँ | शिक्षा की विशेषताएँ | Meaning of education in Hindi | Key definitions of education in Hindi | Characteristics of education in Hindi
- शिक्षा की अवधारणा | भारतीय शिक्षा की अवधारणा | Concept of education in Hindi | Concept of Indian education in Hindi
- शिक्षा के प्रकार | औपचारिक, अनौपचारिक और निरौपचारिक शिक्षा | औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा में अन्तर
- शिक्षा के अंग अथवा घटक | Parts or components of education in Hindi
- शिक्षा के विभिन्न प्रकार | शिक्षा के प्रकार या रूप | Different types of education in Hindi | Types or forms of education in Hindi
- निरौपचारिक शिक्षा का अर्थ तथा परिभाषा | निरौपचारिक शिक्षा की विशेषताएँ | निरौपचारिक शिक्षा के उद्देश्य
- शिक्षा के प्रमुख कार्य | शिक्षा के राष्ट्रीय जीवन में क्या कार्य | Major functions of education in human life in Hindi | What work in the national life of education in Hindi
- वर्धा बुनियादी शिक्षा | वर्धा बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत | बुनियादी शिक्षा के उद्देश्य | वर्धा शिक्षा योजना के गुण - दोष
- राज्य के शैक्षिक कार्यों का वर्णन | शैक्षिक अभिकरण के रूप में राज्य के कार्यों का वर्णन कीजिये
- शैक्षिक अभिकरण के रूप में विद्यालय के कार्य | शैक्षिक अभिकरण के रूप में विद्यालय के कार्यों का वर्णन कीजिये
- विद्यालय को शिक्षा का प्रभावशाली अभिकरण बनाने के उपाय | विद्यालय को शिक्षा का प्रभावशाली अभिकरण बनाने के उपायों का वर्णन कीजिये
- शैक्षिक अभिकरण के रूप में परिवार के कार्य | Family functions as an educational agency in Hindi
- नवाचार का अर्थ | नवाचारों को लाने में शिक्षा की भूमिका | नवाचार की विशेषतायें
- नवाचार के मार्ग में अवरोध तत्व | शिक्षा में 'नवीन प्रवृत्तियों (नवाचार) के मार्ग में अवरोध तत्वों' का वर्णन
- दर्शन का अर्थ | दर्शन की परिभाषाएं | दर्शन का अध्ययन क्षेत्र
- गांधी जी का शिक्षा दर्शन - आदर्शवाद, प्रयोजनवाद और प्रकृतिवाद का समन्वय है।
- शिक्षा में महात्मा गाँधी का योगदान या शैक्षिक विचार | गाँधीजी के शिक्षा दर्शन से आप क्या समझते हैं?
- विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन शिक्षाशास्त्री के रूप में | विवकानन्द के अनुसार शिक्षा के पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियां

- मानव निर्माण शिक्षा में स्वामी विवेकानन्द का योगदान | मानव निर्माण शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य
- आदर्शवाद में शिक्षा के उद्देश्य | आदर्शवाद में शिक्षा के सम्प्रत्यय
- जॉन डीवी के प्रयोजनवादी शिक्षा | जॉन डीवी की प्रयोजनवादी शिक्षा का अर्थ
- रूसो की निषेधात्मक शिक्षा | निषेधात्मक शिक्षा क्या है रूसो के शब्दों में बताइये
- आदर्शवाद की परिभाषा | आदर्शवाद के मूल सिद्धान्त
- सुकरात का शिक्षा दर्शन | सुकरात की शिक्षण पद्धति
- प्रकृतिवाद में रूसो एवं टैगोर का योगदान | प्रकृतिवाद में रूसो का योगदान | प्रकृतिवाद में टैगोर का योगदान
- प्रकृतिवाद क्या है | प्रकृतिवादी शिक्षा की प्रमुख विशेषताएँ | प्रकृतिवादी पाठ्यक्रम के सामान्य तत्व
- प्रकृतिवाद में रूसो का योगदांन | रूसो की प्रकृतिवादी विचारधारा
- प्रयोजनवाद का अर्थ | प्रयोजनवाद दर्शन की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन
- प्रयोजनवाद के शिक्षा के उद्देश्य | प्रयोजनवाद तथा शिक्षण-विधियाँ | प्रयोजनवाद के अनुसार शिक्षा-पाठ्यक्रम
- प्रयोजनवाद और प्रकृतिवाद मे तुलना | प्रकृतिवादी दर्शन की विशेषताएँ | प्रयोजनवाद की विशेषताएं
- आधुनिक शिक्षा पर प्रयोजनवाद के प्रभाव का उल्लेख
- आधुनिक शिक्षा पर प्रकृतिवाद का प्रभाव | आधुनिक शिक्षा पर प्रकृतिवाद क्या प्रभाव पड़ा
- प्रयोजनवाद में पाठ्यक्रम के सिद्धान्त | प्रयोजनवादी पाठ्यक्रम पर संक्षिप्त लेख | प्रयोजनवाद में पाठ्यक्रम की विषयवस्तु का वर्णन
- ओशो का शैक्षिक योगदान | ओशो के शैक्षिक योगदान पर संक्षिप्त लेख
- फ्रेरा का शिक्षा दर्शन | फ्रेरा का शैक्षिक आदर्श | Frara's education philosophy in hindi | Frara's educational ideal in hindi
- इवान इर्लिच का जीवन परिचय | इर्लिच का शैक्षिक योगदान | Ivan Irlich's life introduction in hindi | Irlich's educational contribution in hindi
- जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य | जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के कार्य
- जे. कृष्णामूर्ति के दार्शनिक विचार | जे. कृष्णामूर्ति के दार्शनिक विचारों का वर्णन

sarkariguider.com